कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) ....

(In Words) ....

....

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ....

....

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी ☐

विषय चित्रकला

परीक्षा का दिन शनिवार

दिनांक 30-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 165/2019

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	1	'सलीम का जन्म' नामक चित्र की रचना 'केशु' नामक चित्रकार द्वारा की गई। यह चित्र अकबरकालीन चित्रों मे महत्वपूर्ण है।
	2	'मजनू का जन्म' नामक चित्र मीर सैय्यद अली का एक महत्वपूर्ण चित्र है। जो लौकिक जीवन से सम्बंधित है।
	3	किसान, नौकर, दरबान, रसोइया आदि चित्र कम्पनी शैली से सम्बन्धित है। कम्पनी शैली के चित्रकारों ने भारतीय जीवन से जुड़े अनेक दृश्य चित्र बनाये।

BSER-165/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	4	'रावण और जटायु' नामक चित्र 'राजा र[illegible] वर्मा' का है
	5	'दिल्ली शिल्पी चक्र समूह' की स्थापना 2[illegible] 1949 ई. को हुई थी।
	6	'फूल बेचने वाली' नामक कृति 'नारायण [illegible] बेन्द्रे' की कृति है। ये प्रसिद्ध आधुनि[illegible] भारतीय चित्रकार थे।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	11	'मिल-कॉल' नामक मूर्तिशिल्प श्री रामकिंकर बैज द्वारा बनाया गया है। रामकिंकर बैज आधुनिक भारतीय मूर्तिकला के जनक कहलाते हैं।
	12	'टॉयलेट' नामक मूर्तिशिल्प शांखो चौधरी का एक प्रसिद्ध मूर्तिशिल्प है। इसमे स्त्री की देह को बनाया गया है।
	13	'मोर का चितेरा' राजस्थान के आधुनिक चित्रकार 'देवकीनन्दन शर्मा' को कहा जाता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

13

विमलशाही मन्दिर —›

ये मन्दिर प्रथम जैन
आदिनाथ को समर्पित है। ये मन्दिर सि
मे माउन्ट आबू से 2 km दूर प
स्थित है
इसका निर्माण गुजरात के सोलंकी शासक
भीमदेव के मंत्री विमलशाह द्वारा 103
मे करवाया गया।

BSER-16/2019

14

कलकत्ता कला समूह —›

इस समूह क
स्थापना 1943 ई मे प्रदोष दास गुप्ता व
निरोद मजूमदार द्वारा की गई।
इस समूह का मुख्य उद्देश्य रूढ़िवादी प
को जड़ से खत्म करना था।
ये एक अखिल भारतीय आन्दोलन की
तरह 1943–53 ई तक सक्रिय रहा।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

15 'पेग' के कलाकार →

'पेग' कला समूह का पूरा नाम 'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप' ~~का~~ है। आरा, रजा सूजा नामक कलाकार इसके प्रमुख कलाकार व संस्थापक है।

17 देवी प्रसाद राय चौधरी के मूर्तिशिल्प → देवी प्रसाद राय चौधरी के प्रमुख मूर्तिशिल्प निम्नलिखित है →

(1) शहीद स्मारक (पटना)।
(2) श्रम की विजय (चैन्नई)।

18 द्वारका प्रसाद शर्मा →

द्वारका प्रसाद शर्मा का जन्म 1922 ई. को बीकानेर मे हुआ। ये बोर्ड का चित्र बनाने मे पारंगत थे।

प्रमुख चित्र → नौका विहार, युगदर्शन, गौरीपूजा आदि।

BSER 16/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

19 **राम जैसवाल के चित्र →**

राम जैसवाल के प्रमुख चित्रों के शीर्षक निम्नलिखित हैं →

(1) वियोगी शिव ।
(2) गोमती तट ।
(3) स्ट्रीट सींगर ।

20 **स्व. गोपीचन्द मित्रा के मूर्तिशिल्प →**

स्व. गोपीचन्द मित्रा के मूर्तिशिल्पों के शीर्षक निम्नलिखित है →

(1) यह बोझ नहीं मेरा भाई है ।
(2) माँ व शिशु ।
(3) शिव शक्ति ।

विशेष नोट →

इन्होंने मूर्तिकला को बढ़ावा देने के लिए "सनातन धर्म मूर्ति आर्ट" नामक संस्थान की स्थापना की ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

30 **बँगाल शैली** —

बँगाल शैली का जनक अवनीन्द्रनाथ टैगोर को माना जाता है। अवनीन्द्रनाथ ठाकुर की कला पर पाश्चिमी, ईरानी, चीनी, जापानी, मुगल, राजस्थानी व अजन्ता शैलियों का प्रभाव था। इन सब के समन्वय से ही अवनीन्द्र नाथ ठाकुर ने बँगाल शैली का सूत्रपात किया। इसे ठाकुर शैली के नाम से भी जाना जाता है।

बँगाल शैली का उद्भव व विकास —

बँगाल शैली के विकास मे ई. बी. हैवेल का महत्वपूर्ण योगदान रहा। ये 1884 ई. मे मद्रास कला विश्वविद्यालय के प्रधानाचार्य बने। भारत मे कॉंग्रेस की स्थापना से जागृति की लहर आयी।

ई. बी. हैवेल ने विश्व का ध्यान भारतीय कला की ओर आकृष्ट करते हुए कहा कि "यूरोपीय कला तो सांसारिक वस्तुओं का ही ज्ञान कराती है। परन्तु भारतीय कला ~~सर्वव्यापी~~ अजर व अमर है"।

कुछ समय पश्चात इनकी नियुक्ति 1896 ई. मे कलकत्ता कला स्कूल ऑफ आर्ट मे हुई। वहाँ पर ये अवनीन्द्रनाथ के सम्पर्क मे आये। इन्ही की प्रेरणा से अवनीन्द्र बाबू ने बँगाल

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

शैली का सूत्रपात किया। इस शैली का उद्भव एक आन्दोलन के रूप में हुआ। इसका प्रारम्भ में सर्वत्र विरोध ही हुआ। लेकिन बंगाल शैली के कलाकार अपने मार्ग पर दृढ़ रहे। बाद में बंगाल शैली के प्रति लोगों में रुझान बढ़ा।

बंगाल शैली की विशेषताएँ :-

(i) यह शैली सबल व स्पष्ट है।
(ii) इसमें रेखांकन के महत्व को पुनः प्रतिष्ठित किया गया।
(iii) इसमें भड़कीले रंगों के स्थान पर सौम्य रंगों का प्रयोग हुआ।
iv इस शैली में विदेशी कागज व जलरंगों का प्रयोग किया गया।
v इसमें वास्तु व प्राकृतिक अलंकरण का अभाव है।

बंगाल शैली के प्रमुख चित्रकार :-

1. अवनीन्द्र नाथ ठाकुर।
2. नन्दलाल बसु।
3. आनन्द कैंटिश कुमार स्वामी।
4. अमृता शेरगिल।
5. यामिनी राय।
6. असित कुमार हालदार।
7. ई० बी० हैवल।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

28

पहाडी शैली → पहाडी शैली अपनी भावात्मक व रसमयी अभिव्यक्ति के कारण जानी जाती है। प्राकृतिक सौन्दर्य ने इसे श्रेष्ठता के स्तर पर पहुँचाया है।

पहाडी शैली की विशेषताएँ → पहाडी शैली की विशेषताएँ निम्नलिखित है →

(i) पात्र चित्रण।
(2) वस्त्राभुषण।
(3) प्राकृति चित्रण।
(4) भवन निर्माण।
(5) हाशिये।
(6) धार्मिक चित्रण।

1. पात्र चित्रण → पहाडी शैली मे नायक को सुगठित शरीर व नायिका को छरहरी छरकाठी मे चित्रित किया गया है।

2. वस्त्राभुषण → पहाडी शैली मे नायक को लम्बा जामा व कलिंगीदार पगडी तथा नायिका को घेरदार घाघरा व पारदर्शी ओढनी के साथ चित्रित किया गया।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

3. प्राकृति चित्रण —

पहाड़ी शैली में प्राकृति चित्रण की बहुतायतता है। इसमें पेड़ों को पत्तिनुमा चित्रित किया गया है। कृष्ण के सखायाय, बछड़ो को प्रसंगानुसार बनाया गया है।

4. भवन निर्माण —

पहाड़ी शैली मे भवन निर्माण मे अबरकी सफेद रंगो का प्रयोग हुआ है। ये मुगलिया प्रभाव लिये हुए है।

5. हाशिये —

पहाड़ी शैली मे हाशिये लाल-पीले रंगो मे पतले पट्टीनुमा बनाये गये है जिन पर टापरी लिपी लिखी गई है।

5. धार्मिक चित्रण —

पहाड़ी शैली मे वैष्णव धर्म से सम्बन्धित चित्रो का निर्माण हुआ है। इनमे नायक के रूप मे ~~कृष्ण~~ कृष्ण तथा नायिका के रूप मे राधा को चित्रित किया गया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

27

महाबलिपुरम :-

महाबलीपुरम मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला व स्थापत्य कला का प्रमुख केन्द्र रहा यहां के मूर्तिशिल्प पल्लवकालीन मूर्तिकला की गौरवगाथा का बयान करते है।

महाबलीपुरम की मूर्तिकला का विकास :-

शैव धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा के कारण पल्लवकालीन राजा नृसिंह वर्मन द्वितीय ने कांची को अपनी राजधानी बनाया। इस समय मूर्ति निर्माण की एक नवीन शैली विकसित हुई। जिसे "सप्तरथ पगोडा" या मामल्य शैली के नाम से जाना जाता है।

महाबलिपुरम व कांची के प्रमुख मूर्तिशिल्प :-

कांची के मूर्तिशिल्प :-

1. बैकुण्ठ पेरिमल मन्दिर।
2. सिद्धेश्वर शिव मन्दिर।
3. योगेश्वर शिव मन्दिर।

महाबलीपुरम के मूर्तिशिल्प :-

1. गंगावतरण।
2. सप्तरथ मन्दिर।
3. विष्णु मन्दिर।
4. दुर्गामन्दिर।

BSER-165/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

गंगावतरण शिल्प →

ये शिल्प महाबलीपुरम का सबसे श्रेष्ठ मूर्तीशिल्प है। ये मूर्तीशिल्प खुले आकाश के नीचे बना है। इसका आकार 98 × 31 फीट है। इस शिल्प को 'तीर्थम' या 'भागीरथ की तपस्या' के नाम से भी जाना जाता है। इस शिल्प मे गंगा के बहाव को दर्शाने के लिए एक चौडी दरार बनायी गयी है। दरार के दोनो ओर मानव, किन्नर, गंधर्व, विद्वान, देव, हाथी आदि को हाथ जोडे दिखाया गया है। गंगा के बहाव के ठीक नीचे भागीरथ को ध्यान मगन चित्रित किया गया है।

8 पनघट, साधु, हाट, बाजार आदि चित्र 'के० के० हैब्बर' द्वारा चित्रित किये गये हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

23

मृणालिनी मुखर्जी के मूर्तिशिल्प →

मृणालिनी मुखर्जी के मूर्तिशिल्पो के शीर्षक निम्नलिखित है →

1. वन राजा ।
2. पाम स्क्रेप ।
3. वुमन ऑन पीकॉक ।
4. लोटस पोन्ड ।
5. देवी ।
6. पुरुष ।

BSER-16/2019

22

कम्पनी शैली →

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के संरक्षण मे विकसित शैली कम्पनी शैली कहलाती ।

कम्पनी शैली के प्रमुख केन्द्र →

1. पटना ।
2. अवध ।
3. मुर्शिदाबाद ।
4. गया ।
5. बंगाल ।
6. मद्रास ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

कम्पनी शैली के चित्रकार →

कुम्पनी शैली अंग्रेजी व भारतीय चित्रकारो ने कार्य किया। ~~जो निम्न है~~ →

अंग्रेजी चित्रकार →

थामस विलियम, विलियम डेनियल, एमिली ईडेन, रॉबर्ट, मादाम बेलनोस, टिल्ली केटल आदि।

भारतीय चित्रकार →

शिवलाल, राजाराम, सीताराम, गोविन्द आदि।

21 दक्षिणी कला शैली →

14 वीं शताब्दि में दक्षिणी भारत मे दो महत्वपूर्ण राज्यो का उदय हुआ।
1336 ई. मे विजयनगर साम्राज्य तथा 1347 ई. मे बहमनी सल्तनत की स्थापना हुई। विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हरिहर व बुक्का नामक दो भाईयो द्वारा की गई।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

विजयनगर दक्षिण भारत का एक गौरवशाली साम्राज्य बना। बहमनी सल्तनत का नाम अलाउद्दीन बहमन के नाम पर बहमनी सल्तनत पड़ा।

बहमनी सल्तनत के केन्द्र →

(1) अहमदनगर (2) बीजापुर (3) गोलकुण्डा (4) बीदर (5) बीरार।

[redacted]

दक्षिणी कला पर दक्षिणी ईरानी व अरेबियन कला का प्रभाव पड़ा।

BSER 163/2019

26 मुगल शैली की विशेषताएं →

मुगल शैली की निम्न विशेषताएं पायी जाती है →

(1) चित्रण के विषय।
(2) वस्त्राभूषण।
(3) हाशिये।
(4) भवन निर्माण चित्रण।
(5) वर्ण वैविध्य।

1. चित्रण के विषय → मुगल शैली मे

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

बादशाहो की वीरता, आखेट, आमोद-प्रमोद व उत्सवों से सम्बन्धित चित्र का चित्रण हुआ। मुगल शैली दरबारी शैली रही।

2. वस्त्राभूषण →
मुगल शैली में प्रधान विषय को भव्यता के साथ दर्शाया जाता था। इसमें पुरुष को लम्बा जामा तथा तंग पाजामा पहने व स्त्री को चुस्त पाजामा व पारदर्शी ओढनी के साथ चित्रित किया गया।

3. हाशिये →
मुगल शैली मे हाशिये चौडे व आलंकारिक बेल-बुटेदार बनाये जाते थे।

4. भवन चित्रण →
मुगल शैली मे भवन निर्माण को भी चित्रित किया। भवनो मे ताख, बुर्ज, कंगुरे व किवाडो को आलंकारिक रूप मे चित्रित किया गया।

5. रंग वैविध्य →
मुगल शैली के प्रारम्भिक चित्र ईरानी प्रभाव के कारण चटकीली

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

रंगतो मे बने है। बाद मे कृत्रिम रंगो का प्रयोग किया गया।

विशेष नोट → मुगल शैली पर उत्तरी ईरानी व तुर्की कला का प्रभाव पड़ा।

24 चौमुखा मन्दिर → यह मन्दिर पाली के सादड़ी नामक ग्राम के पास रणकपुर मे स्थित है। यह मन्दिर प्रथम जैन तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित है।
इसकी स्थापना 1439 ई० मे हुई। इस मन्दिर का निर्माण सोमसुन्दर सूरीजी की प्रेरणा से धरणाशाह व रत्नाशाह नामक भाईयो करवाया। उसके निर्माण कार्य मे उस समय 99 लाख रु.की लागत आयी। इस मन्दिर मे सेवाड़ी के सेवाणा पत्थरो का उपयोग किया गया।

चौमुखा मन्दिर के अन्य नाम → चौमुखा मन्दिर को निम्नलिखित नामो से भी जाना जाता है →

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(1) खम्भों का अजायबघर।
(2) त्रिभुवन भवन।
(3) धरणाविहार।
(4) त्रैलोक्य दीपक।

इस मन्दिर मे 24 मण्डप 85 शिखर व 1444 खम्भे बने है।

विशेष नोट →
इस मन्दिर के गर्भगृह मे आदिनाथ की संगमरमर की चार प्रतिमाऐ लगी हुई है। जिस कारण इसे चौमुखा मन्दिर के नाम से जाना जाता है।

29 उ०

अथवा

बीकानेर शैली →
बीकानेर शैली मारवाड स्कूल का ही एक भाग है। लेकिन अपनी कला के कारण यह एक स्वतंत्र पहचान रखती है।
बीकानेर की स्थापना राव बीका

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

द्वारा की गई। बीकानेर के मुगल शासकों से मधुर सम्बन्ध थे। जिसके कारण बीकानेर शैली पर मुगल कला का प्रभाव पड़ा। बीकानेर शैली के विकास में रायसिंह का प्रमुख योगदान रहा।

बीकानेर के राजा दक्षिणी मोर्चे पर मुगल सेना के गवर्नर रहे। राजा 'अनूपसिंह' व 'करणसिंह' के समय बिकानेर शैली का सर्वाधिक विकास हुआ। बीकानेर शैली में मथेरण व उस्ता परिवारो के चित्रकार कार्य करते थे। बीकानेर शैली में भित्ति-चित्रण को बढ़ावा मिला। बाद में इस शैली का पतन हो गया। लेकिन उस्ता परिवार आज भी ऊँट के शरीर पर चित्रकारी की कला को बढ़ावा दे रहे हैं।

बीकानेर शैली की विशेषताएं → बीकानेर शैली की निम्नलिखित विशेषताएं पायी जाती है →

(i) बीकानेर शैली मे पुरुष को सुगठित शरीर व मुंछो से ढके चहरे के साथ गौर-वर्ण में चित्रित किया गया है।

(ii) बीकानेर शैली मे स्त्री को छरहरी मध्यम कद-काठी, पद्माकर नयन, गोल मुख के साथ गौर-वर्ण मे बनाया गया है। स्त्री को वस्त्राभूषणों से सजाया गया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii) बीकानेर शैली मे नायिका भेद, बारहमासा बिहारी सतसई, गीतगोविन्द व रसिकप्रिया पर आधारित चित्र बनाये गये

(iv) बीकानेर शैली मे लाल, पीले, नीले रंगो व अन्य रंगो का प्रयोग मिलता है।

(v) बीकानेरी शैली मे पुरुषो को खिड़कीदार पगड़ी पहने हुए बनाया गया है।

(vi) बीकानेरी शैली मे पुष्पो से आच्छादित तालाबो मे क्रीडाकरते नायक - नायिका को चित्रित किया गया है।

(vii) बीकानेरी शैली मे प्राकृति चित्रण अधिक नही हुआ है। इन चित्रो मे मरूस्थलीय प्रभाव दिखाया गया है।

बीकानेर शैली के प्रमुख चित्रकार →

उस्ता चित्रकार →

कायम, कासिम, रुकनुदीन, अहमद अली आदि।

मथेरण चित्रकार →

मुकुन्द, मुन्नालाल चन्दु

BSER 165/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

विशेष नोट → 'बिन्दु-लक्ष्मी' नामक चित्र बीकानेरी शैली का प्रमुख चित्र है।

25 उषा रानी हूजा → उषा रानी हूजा का जन्म 18 मई 1923 ई. को दिल्ली में हुआ। इनकी मूर्तिकला की शिक्षा रिजेन्ट स्ट्रीट पोलिटेक्निक कॉलेज, लन्दन से हुई। इन्होंने 1959 में जयपुर को अपनी कर्मस्थली बनाया। इनकी शिक्षा यूरोप में हुई इसलिए इनकी कला पर 'एपिस्टन मुलाल' व 'हेनरी मूर' का प्रभाव पड़ा।

उषा रानी हूजा के मूर्तिशिल्प →

(i) रिसर्च स्कॉलर।
(ii) मॉडर्न्स मॉन्यूमेन्ट।
(iii) श्रमिक।
IV घूमर।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	7	पु. रामचन्द्रन का आकर्षक चित्र का शीर्षक 'कमल सरोवर' है। इसमें आकर्षक रंगों व लयात्मक रेखा का प्रयोग किया गया है।
	9	भूर सिंह शेखावत के चित्र — भूर सिंह शेखावत के चित्र शीर्षक निम्नलिखि है — (1) आरा मशीन चलाते हुए। (2) बुनकर। (3) ग्रामीण बालिकाऐ।

BSER 165/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	16	**राजस्थान के पद्मश्री से सम्मानित चित्रकार** —
		(1) ~~अर्जुनलाल प्रजापत~~ व रामगोपाल विजयवर्गीय।
		(2) कृपाल सिंह शेखावत।
		राजस्थान के आधुनिक चित्रकार कहे जाते है।

नामांक —